L.N. MITHILA UNIVERSITY
DARBHANGA (BIHAR)
Sub- psychology
IA 2nd year. 12
PAPER- class- 12
TOPIC- logical mathematical.

Dr. Pramod Kumar Sahu.
Assit- Professor.
Guest- Teacher.
V.S.J. College Rajnagar
MADHUBANI (BIHAR)
pramodkumar dbg 2018 @ gmail.com.

बहु-बुद्धि का सिद्धान्त, भाषागत (linguistic)

(भाषा के उत्पादन और उपयोग के कौशल) यह अपने विचारों को प्रकट करने तथा दूसरे व्यक्तियों के विचारों को समझने हेतु प्रवाह तथा नम्यता के साथ भाषा का उपयोग करने की क्षमता है। जिन व्यक्तियों में यह बुद्धि अधिक होती है, वे शब्द-कुशल होते हैं। ऐसे व्यक्ति शब्दों के भिन्न-भिन्न अर्थों के प्रति संवेदनशील होते हैं, अपने मन में भाषा के बिंबों का निर्माण कर सकते हैं और स्पष्ट तथा परिशुद्ध भाषा का उपयोग करते हैं। लेखकों तथा कवियों में यह बुद्धि अधिक मात्रा में होती है।

तार्किक-गणितीय (logical-mathematical) वैज्ञानिक चिंतन तथा समस्या समाधान के कौशल- इस प्रकार की बुद्धि की अधिक मात्रा रखने वाले व्यक्ति तार्किक तथा आलोचनात्मक चिंतन कर सकते हैं। वे अमूर्त तर्कना कर लेते हैं, और गणितीय समस्याओं के हल के लिए प्रतीकों का प्रहस्तन अच्छी प्रकार से कर लेते हैं। वैज्ञानिकों तथा नोबेल पुरस्कार विजेताओं में इस प्रकार की बुद्धि अधिक पाई जाने की संभावना रहती है।

दैशिक (spatial) (दृश्य बिंब तथा प्रतिरूप निर्माण के कौशल) यह मानसिक बिंबों को बनाने, उनका उपयोग करने तथा उनमें मानसिक धरातल पर परिमार्जन करने की योग्यता है। इस बुद्धि को अधिक मात्रा में रखने वाला व्यक्ति सरलता से दैशिक सूचनाओं को अपने मस्तिष्क में रख सकता है। विमान-चालक, नाविक, मूर्तिकार, चित्रकार, वास्तुकार, आंतरिक साज-सज्जा के विशेषज्ञ, शल्य-चिकित्सक आदि में इस बुद्धि के अधिक

Scanned with CamScanner

पाए जाने की संभावना होती है।

संगीतात्मक (musical) सांगीतिक लय तथा अभिव्यक्तियों के प्रति संवेदनशीलता। सांगीतिक अभिव्यक्तियों को उत्पन्न करने उनको सृजित तथा प्रत्यक्षण करने की क्षमता सांगीतिक योग्यता कहलाती है। इस बुद्धि की उच्च मात्रा रखने वाले लोग ध्वनियों और स्पंदनों तथा ध्वनियों की नई अभिव्यक्तियों के सृजन के प्रति अधिक संवेदनशील होते हैं।

शारीरिक - गति संवेदी (Bodily-kinaesthetic) संपूर्ण शरीर अथवा उसके किसी अंग की लोच को उपयोग करना तथा उसमें सृजनात्मकता प्रदर्शित करना। किसी वस्तु अथवा उत्पाद के निर्माण के लिए अथवा मात्र शारीरिक प्रदर्शन के लिए संपूर्ण शरीर अथवा उसके किसी एक अथवा एक से अधिक अंग की लोच तथा पेशीय कौशल की योग्यता शारीरिक - गति संवेदी योग्यता कही जाती है। धावकों, नर्तकों, अभिनेताओं / अभिनेत्रियों, खिलाड़ियों, जिमनास्टों तथा शल्य - चिकित्सकों में इस बुद्धि की अधिक मात्रा पाई जाती है।

अंतर्वैयक्तिक (Interpersonal) दूसरे व्यक्तियों के सूक्ष्म व्यवहारों के प्रति संवेदनशीलता - इस योग्यता द्वारा व्यक्ति दूसरे व्यक्तियों की अभिप्रेरणाओं या उद्देश्यों भावनाओं तथा व्यवहारों का सही बोध करते हुए उनके साथ मधुर संबंध स्थापित करता है। मनोवैज्ञानिक, परामर्शदाता, राजनीतिज्ञ सामाजिक कार्यकर्ता तथा धार्मिक नेता आदि में उच्च अंतर्वैयक्तिक बुद्धि पाए जाने की संभावना होती है।

अंत:व्यक्तिक (Intrapersonal) अपनी निजी भावनाओं, अभिप्रेरणाओं तथा इच्छाओं का अभिज्ञान - इस योग्यताओं के अंतर्गत व्यक्ति के अपनी शक्ति तथा कमजोरियों का ज्ञान और उस ज्ञान को दूसरे व्यक्तियों के साथ सामाजिक अंत:क्रिया में उपयोग करने का कौशल सम्मिलित है। जिससे वह अन्य व्यक्तियों से प्रभावी संबंध स्थापित करता है। इस बुद्धि की अधिक मात्रा रखने

Scanned with CamScanner

वाले व्यक्ति अपनी अनुभूति या पहचान, आनंद अभिव्यक्ति और जीवन के अर्थों को समझने में अति संवेदनशील होते हैं। दार्शनिक तथा आध्यात्मिक नेता आदि में इस प्रकार की उच्च बुद्धि देखी जा सकती है।

प्रकृतिवादी (Naturalistic) (पर्यावरण के प्राकृतिक पक्ष की विशेषताओं के प्रति संवेदनशीलता) इस बुद्धि का तात्पर्य प्राकृतिक पर्यावरण से हमारे रिश्तों की पूर्ण अभिज्ञता से है। विभिन्न पशु, पक्षियों तथा वनस्पतियों के सौंदर्य को बोध करने में तथा प्राकृतिक पर्यावरण में सूक्ष्म विभेद करने में यह बुद्धि सहायक होती है। शिकारी, किसान, पर्यटक, वनस्पतिविज्ञानी, प्राणीविज्ञानी और पक्षीविज्ञानी आदि में प्रकृतिवादी बुद्धि अधिक मात्रा में होती है।

बुद्धि का त्रिचापीय सिद्धांत!

रॉबर्ट स्टर्नबर्ग (1985) ने बुद्धि का त्रिचापीय सिद्धांत प्रस्तुत किया। स्टर्नबर्ग के अनुसार बुद्धि वह योग्यता है जिससे व्यक्ति अपने पर्यावरण के प्रति अनुकूलित होता है। अपने तथा अपने समाज और संस्कृति के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु पर्यावरण के कुछ पक्षों का चयन करता है और उन्हें परिवर्तित करता है। इस सिद्धांत के अनुसार मूल रूप से बुद्धि तीन प्रकार की होती है घटकीय, आनुभविक तथा सांदर्भिक बुद्धि के त्रिचापीय सिद्धांत के तत्व हैं।

घटकीय बुद्धि - घटकीय या विश्लेषणात्मक बुद्धि वह है जिसमें किसी समस्या का समाधान करने के लिए प्राप्त सूचनाओं का विश्लेषण करता है। इस बुद्धि को अधिक मात्रा रखने वाले लोग विश्लेषणात्मक तथा आलोचनात्मक ढंग से सोचते हैं। और विद्यालय में सफलता प्राप्त करते हैं। इस बुद्धि के भी तीन अलग-अलग घटक होते हैं, जो अलग-अलग कार्य करते हैं। पहला घटक ज्ञानार्जन से संबंधित होता है। जिसके द्वारा व्यक्ति अधिगम करता है, तथा विभिन्न कार्यों को करने की विधि का ज्ञान प्राप्त

करता है। दूसरा घटक अर्थात् भी एक उच्च स्तरीय घटक होता है, जिसके द्वारा व्यक्ति योजनाएं बनाता है, कि उसको क्या करना है और कैसे करना है। तीसरा घटक निष्पादन से संबंधित होता है, इस बुद्धि द्वारा व्यक्ति किसी कार्य को वास्तव में निष्पादन करता है।

आनुभविक बुद्धि (experiential intelligence)

आनुभविक या सर्जनात्मक बुद्धि वह बुद्धि है, जिसके द्वारा व्यक्ति किसी नई समस्या के समाधान हेतु अपने पूर्व अनुभवों का सर्जनात्मक रूप से उपयोग करता है। यह बुद्धि सर्जनात्मक निष्पादन में प्रतिबिंबित होती है। इस बुद्धि को उच्च मात्रा रखने वाले लोग विगत अनुभवों को मौलिक रूप से समाकलित करते हैं। नयी समस्या के मौलिक समाधान खोजते हुए आविष्कार करते हैं। किसी विशेष स्थिति में वे तुरंत समझ जाते है कि कौन सी सूचना प्रासंगिक होगी।

Dr. Pramod Kumar Sahu
Date - 14/07/2020
Subj. Psychology

Scanned with CamScanner